डाउनलोड मुद्रण

अ+ अ-

अमरूद बन गए

श्रीप्रसाद

आमों के अमरूद बन गए
अमरूदों के केले
मैंने यह सब कुछ देखा है
आज गया था मेले

बकरी थी बिलकुल छोटी सी
हाथी की थी बोली
मगर जुखाम नहीं सह पाई
खाई उसने गोली

छत पर होती थी खों खों खों
मगर नहीं था बंदर
बिल्ली ही यों बोल रही थी
परसो मेरी छत पर

गाय नहीं करती थी बाँ बाँ
बोली वह अंग्रेजी
कहा बैल से, भूसा खालो
देखो भालो, ए जी

मुझको हुआ बड़ा ही अचरज
मुर्गा म्याऊँ करता
हाथ जोड़कर बैठा था वह
चूहे से था डरता

पर जब उगा रात में सूरज
चंदा दिन में आया

क्या होने को है दुनिया में
मैं काफी घबड़ाया

तुरंत मूँद ली मैंने आँखें
और न फिर कुछ देखा
तभी लगा ज्यों जगा रही है
आकर मुझको रेखा

सपना देखा था अजीब सा
बिलकुल गड़बड़ झाला
सपनों की दुनिया में होता
सब कुछ बड़ा निराला!

शीर्ष पर जाएँ

डाउनलोड मुद्रण

अ+ अ-

दही-बड़ा

श्रीप्रसाद

सारे चूहों ने मिल-जुलकर
एक बनाया दही-बड़ा,
सत्तर किलो दही मँगाया
फिर छुड़वाया दही-बड़ा!

दिन भर रहा दही के अंदर
बहुत बड़ा वह दही-बड़ा,
फिर चूहों ने उसे उठाकर
दरवाजे से किया खड़ा।

रात और दिन दही बड़ा ही
अब सब चूहे खाते हैं,
मौज मनाते गाना गाते
कहीं न घर से जाते हैं!

शीर्ष पर जाएँ

डाउनलोड मुद्रण

अ+ अ-

बाल साहित्य

दीवाली दीप

श्रीप्रसाद

दीप जले दीवाली, दीप हैं जले
नन्हें बच्चे प्रकाश, के ये मचले

आँगन मुँडेर सजा, द्वार सजा है
लहराती दीपक की, ज्योति ध्वजा है
धरती पर जगर मगर तारे निकले
दीप जले दीवाली, दीप हैं जले

दीप रखे हैं हमने ही धरती पर
ज्योति सदा सबको लगती है सुंदर
देख उसे अँधियारा स्वयं ही गले
दीप जले दीवाली, दीप हैं जले

उत्सव है ज्योति का मनाते हैं हम
खुशियों के गीत सदा गाते हैं हम
बच्चे दुनिया के, आकाश के तले
दीप जले दीवाली, दीप हैं जले

ऊपर भी तारे हैं नीचे भी तारे
फूलों की भांति खिले दीपक हैं सारे
पेड़ों पर फल जैसे आज हैं फले
दीप जले दीवाली, दीप हैं जले

मेहनत की ज्योति अब जलाना हमको
धरती के कण-कण सूरज सा चमको
हो जाएगा प्रकाश, साँझ जो ढले
दीप जले दीवाली, दीप हैं जले

शीर्ष पर जाएँ

डाउनलोड मुद्रण

अ+ अ-

बाल साहित्य

बड़ा मजा आता

श्रीप्रसाद

रसगुल्लों की खेती होती,
बड़ा मजा आता।
चीनी सारी रेती होती,
बड़ा मजा आता।

बाग लगे चमचम के होते,
बड़ा मजा आता।
शरबत के सब बहते सोते,
बड़ा मजा आता।

चरागाह हलवे का होता,
बड़ा मजा आता।
हर पर्वत मेवे का होता।
बड़ा मजा आता।

लड्डू की सब खानें होतीं,
बड़ा मजा आता।
दुनिया बरफी पेड़े बोती,
बड़ा मजा आता।

मिलती रुपए किलो मिठाई,
बड़ा मजा आता।
रुपए होते पास अढ़ाई,
बड़ा मजा आता।

शीर्ष पर जाएँ

डाउनलोड मुद्रण

अ+ अ-

बड़ी बुआ

श्रीप्रसाद

खाने को दो खीर कदम
खाने को दो मालपुआ,
खाने को देना पेड़े
माँग रही हैं बड़ी बुआ!

बड़ी बुआ ने खाया सब
बड़े पलँग पर बैठीं अब।
अब क्या लेंगी बड़ी बुआ,
शायद माँगेंगी हलुआ।

शीर्ष पर जाएँ

डाउनलोड मुद्रण

अ+ अ-

बिल्ली को जुकाम

श्रीप्रसाद

बिल्ली बोली - बड़ी जोर का
मुझको हुआ जुकाम,
चूहे चाचा, चूरन दे दो
जल्दी हो आराम!

चूहा बोला - बतलाता हूँ
एक दवा बेजोड़,
अब आगे से चूहे खाना
बिल्कुल ही दो छोड़!

शीर्ष पर जाएँ

डाउनलोड मुद्रण

अ+ अ-

मुर्गे की शादी

श्रीप्रसाद

ढम-ढम, ढम-ढम ढोल बजाता
कूद-कूदकर बंदर,
छम-छम घुँघरू बाँध नाचता
भालू मस्त कलंदर!

कुहू-कुहू-कू कोयल गाती
मीठा मीठा गाना,
मुर्गे की शादी में है बस
दिन भर मौज उड़ाना!

शीर्ष पर जाएँ

डाउनलोड मुद्रण

अ+ अ-

सुबह

श्रीप्रसाद

सूरज की किरणें आती हैं,
सारी कलियाँ खिल जाती हैं,
अंधकार सब खो जाता है,
सब जग सुंदर हो जाता है

चिड़ियाँ गाती हैं मिलजुल कर,
बहते हैं उनके मीठे स्वर,
ठंडी-ठंडी हवा सुहानी,
चलती है जैसी मस्तानी

यह प्रातः की सुख बेला है,
धरती का सुख अलबेला है,
नई ताजगी, नई कहानी,
नया जोश पाते हैं प्राणी

खो देते हैं आलस सारा,
और काम लगता है प्यारा,
सुबह भली लगती है उनको,
मेहनत प्यारी लगती जिनको

मेहनत सबसे अच्छा गुण है
आलस बहुत बड़ा दुर्गुण है
अगर सुबह भी अलसा जाए
तो क्या जग सुंदर हो पाए

शीर्ष पर जाएँ

डाउनलोड मुद्रण

अ+ अ-

सौ हाथी नाचें

श्रीप्रसाद

सौ हाथी यदि नाच दिखाएँ
यह हो कितना अच्छा,
नाच देखने को आएगा
तब तो बच्चा-बच्चा

धम्मक-धम्मक पाँव उठेंगे
सूँडें झम्मक-झम्मक
उछल-उछल हाथी नाचेंगे
छम्मक-छम्मक-छम्मक।

जो देखेगा हँसते-हँसते
पेट फूल जाएगा,
देख-देख करके सौ हाथी
बड़ा मजा आएगा।

ऐसा नाच कहीं भी जो हो
उसे देखने जाऊँ,
ढम्म-ढमाढम ढोल बजाऊँ
और गीत भी गाऊँ।

जब भी सौ हाथी आएँगे
होगा नाच तभी ये,
मगर देख पाऊँगा क्या मैं
सुंदर नाच कभी ये?

शीर्ष पर जाएँ

डाउनलोड मुद्रण

अ+ अ-

हाथी चल्लम-चल्लम

श्रीप्रसाद

हल्लम हल्लम हौदा, हाथी चल्लम चल्लम
हम बैठे हाथी पर, हाथी हल्लम हल्लम

लंबी लंबी सूँड़ फटाफट फट्टर फट्टर
लंबे लंबे दाँत खटाखट खट्टर खट्टर

भारी भारी मूँड़ मटकता झम्मम झम्मम
हल्लम हल्लम हौदा, हाथी चल्लम चल्लम

पर्वत जैसी देह थुलथुली थल्लल थल्लल
हालर हालर देह हिले जब हाथी चल्लल

खंभे जैसे पाँव धपाधप पड़ते धम्मम
हल्लम हल्लम हौदा, हाथी चल्लम चल्लम

हाथी जैसी नहीं सवारी अग्गड़ बग्गड़
पीलवान पुच्छन बैठा है बाँधे पग्गड़

बैठे बच्चे बीस सभी हम डग्गम डग्गम
हल्लम हल्लम हौदा, हाथी चल्लम चल्लम

दिनभर घूमेंगे हाथी पर हल्लर हल्लर
हाथी दादा जरा नाच दो थल्लर थल्लर

अरे नहीं हम गिर जाएँगे घम्मम घम्मम
हल्लम हल्लम हौदा, हाथी चल्लम चल्लम

शीर्ष पर जाएँ